Notes

भाषा की शिक्षा — भाषा शिक्षण के उद्देश्यों यदि विश्लेषण किया जाय तो उसे प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं। अर्थ ग्रहण, अभिव्यक्ति तथा सृजनात्मकता और तीनों का विकास शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग है। और शिक्षा का उद्देश्य, इक और अभी जो की बालक सभी बातो को समझने लगता है।

२. ~~नैतिकता~~ अंकगणित की शिक्षा — मस्तिष्क के विकास लिए आन्तरिक सूझ एवं कल्पना शक्ति का विकास में दो बातें अतिआवश्यक है। विचार एवं तर्क शक्ति जितना प्रयोग गणित में हो सकता उतना अन्य विषयों में नहीं प्राथमिक स्तरों के बालकों की लम्बाई, वजन, आदि प्रकार के मापो को ज्ञान से प्राप्त होता है।

नैतिकता की शिक्षा — नैतिकता की शिक्षा के जैसा पाठ्यक्रम जैसा प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत बनाया गया पाठ्यक्रम में ऐसे ~~पाठो~~ पाठे रखा जाना आवश्यक है कि बालक समझकर अप्रत्यक्ष रूप से नैतिक शिक्षा ग्रहण कर सकें।

Notes

विज्ञान की शिक्षा — इस स्तर बालक अपने ज्ञान को मनुष्य, वनस्पति, अन्य जीवो के सम्बंध मे साधारण ज्ञान प्राप्त कर लेने की समीति नही रहना चाहते प्रकृति पर इन वस्तुओ का क्या प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है।

कलाओ की शिक्षा — चित्रकला एक ऐसी कला है। जो सभी बालको के लिए इसे भिन्न-भिन्न रूपों में उपयुक्त सिद्ध हो जाती है। परन्तु काव्य कला कुछ ऐसी कलायें है, जो बालको की होने के कारण उन्हे प्राथमिक स्तर पर नही सीख सकते जिन कलाओ को प्राथमिक स्तर पर नही सीख है। उन्हे दक्षता प्राप्त करना बालको के लिए उपयुक्त रहता है।

Unit-3

Notes पाठ्यक्रम - निर्धारक और व्याख्या, विवेचन या विचार- विमर्श

Curriculum Determinants and Consideration

पाठ्यक्रम के निर्धारक

(Determinants of Curriculum.)

पाठ्यक्रम के निर्धारकों से आशय उन समस्त तत्वों से है। जो कि अपने प्रभाव एवं विशेषताओं के आधार पर पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया को सम्पन्न करते हैं।

इस आकांक्षा का प्रतिनिधित्व जब व्यापार स्तर पर होता है। तो विज्ञान के पाठ्यक्रम में व्यक्तिगत स्वच्छता, परिवेशीय स्वच्छता सम्बन्धी विषय वस्तु को निर्धारित कर दिया जाता है।

शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण करना एक व्यापक कार्य है।

1- शैक्षिक अनुसन्धान :- (Educational Research.)

वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता अनुसन्धान के क्षेत्र का विकास करना है। अनुसन्धान के विकास द्वारा ही शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। जैसे — छात्रों के सर्वांगीण विकास के अनुसार उसकी योग्यता एवं क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना शिक्षा है।

Notes

2. प्रभावी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया :- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशील बनाना प्रमुख शैक्षिक आवश्यकता है। इस आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए द्वारा सम्बन्धित किसी को कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए अनेक प्रकार का प्रयास किये जाते हैं।

3- शैक्षिक समस्याओं का समाधान :- (Effective Teaching learning Process :-) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शैक्षिक व्यवस्था सम्बन्धी अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जिनका समाधान करना शिक्षा की प्रमुख आवश्यकता है। इस आवश्यकताओं की पूर्ति पाठ्यक्रम विकास को सम्भव बनाती है।
जैसे छात्रों में अनुशासनहीनता की समस्या जिसके कारण छात्र न तो पढ़ते हैं और किसी दूसरे को पढ़ने देते हैं।

शैक्षिक वातावरण का निर्माण :- इस वातावरण समय में शिक्षा अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशील वा शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना एक आवश्यक तथ्य है। इसके अभाव में शैक्षिक

Notes
... शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावशील हो जाती है।
... शैक्षिक वातावरण निर्माण के लिए पाठ्यक्रम में
... प्रकार की क्रियाओं का समावेश होते है

5 - बालकों का स्तर ज्ञान :- शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता बालकों के स्तर का ज्ञान करना ज्ञान के स्तर के अभाव में किसी भी शैक्षिक शैक्षाणिक प्रक्रिया को छात्रों के छात्रों के अनुरूप सम्पन्न नहीं किया जा सकता

6 - सामाजिक आकांक्षाओं का ज्ञान :- सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति के अभाव में कोई भी शिक्षा व्यवस्था सफल नहीं मानी जा सकती क्योंकि प्रत्येक शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता एवं दायित्व सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति करना इस कारण सामाजिक आकांक्षाओं की प्रतिकता होता है।

जैसे— बुद्धि परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, योग्यता परीक्षण आदि।

7 शैक्षिक गतिविधियाँ :- इस गतिविधियों की आवश्यकता वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था की प्रमुख आवश्यकता है। किसी भी बाल